भाषा विज्ञान: विज्ञान या कला -

सामान्यतः विज्ञान का अर्थ है ’विशिष्ट ज्ञान‘ अथवा ’विशिष्ट बोध युक्त सुव्यवस्थित ज्ञान‘। ’शास्त्र‘ शब्द भी विज्ञान के साथ चलता है जिसका अर्थ है ’शासन करने वाला‘ अर्थात् क्या करणीय है और क्या अकरणीय है, यह बतलाना शास्त्र का कार्य है। भारत में धर्मशास्त्र, कामशास्त्र इसी ओर इंगित करते हैं। अतः अम व्याकरण को शास्त्र कह सकते हैं, भाषा-विज्ञान नहीं। किन्तु अब मूल अर्थ को भुलाकर भाषाशास्त्र तो क्या भौतिक शास्त्र और राजनीतिक शास्त्र तक कहा जाता है। यह निश्चित है कि भाषा विज्ञान, विज्ञान है किन्तु किस सीमा तक, यह प्रश्न विचारणीय है। तो जिस अर्थ में भौतिक, रसायन या गणित विज्ञान है उस अर्थ में भाषा विज्ञान विज्ञान नहीं है क्योंकि भाषा विज्ञान में कल्पना के लिए स्थान है जबकि भौतिक, रसायन आदि में नहीं है। हाँ, इसका आधार विज्ञान की भाँति है, निष्कर्ष ग्रहण करने के लिए वर्णन भी संभव है, कुछ स्थायी परिणामों या सिद्धान्तों के सन्दर्भ में परीक्षण भी संभव है।

अब दूसरा कला का प्रश्न है। कुछ लोग कला से ’ललित कलाओं‘ का अर्थ लेते हैं। यहाँ कला को इस अर्थ में न लिया जाकर जिस अर्थ में बी.ए., एम.ए. है उस अर्थ में लिया जाय तो भाषा विज्ञान को कला कहा जा सकता है अर्थात् कला को इसके विस्तृत अर्थ में लेना होगा, जिसमें समाजशास्त्र या राजनीति विज्ञान आदि भौतिक शास्त्र की भाँति निश्चित विज्ञान न होने के कारण आते हैं।

दूसरे, कला का एकमात्र लक्ष्य मनोरंजन करना और सौंदर्य की सृष्टि करना है, जबकि भाषा विज्ञान का लक्ष्य इन दोनों से भिन्न भाषा से संबंधित ज्ञान की वृद्धि करना है। एक बात यह भी है कि भाषा समाज की सम्पत्ति है, जबकि कला मनुष्य द्वारा उद्धृत है। इस प्रकार यह कला न होकर विज्ञान के अधिक निकट है। अध्ययन के विषयों को तीन वर्गों में विभाजित किया जाता है -

(1) प्राकृतिक विज्ञान (Natural Science) - जैसे भौतिक विज्ञान

(2) सामाजिक विज्ञान (Social Science) - समाजशास्त्र, राजनीतिक शास्त्र

(3) मानविकी (Humanities) - जैसे चित्रकला, साहित्य और संगीत कला आदि।

वैसे तो भाषा विज्ञान निश्चित रूप से सामाजिक विज्ञान के निकट है, किन्तु उसके विभाग प्राकृतिक विज्ञान व मानविकी के निकट भी पड़ते हैं। जैसे - ध्वनि का अध्ययन प्राकृतिक विज्ञान के समकक्ष हैं।

डाॅ. भोलानाथ तिवारी के अनुसारष् ’’यदि विज्ञान का अर्थ केवल विशुद्ध या सम्यक् या विशेष ज्ञान ही है तो भाषा विज्ञान ’विज्ञान‘ कहा जा सकता है परन्तु विज्ञान में कुछ और भी बातें आवश्यक हैं - उसमें विकल्प के लिए कोई स्थान नहीं, उसके नियम सर्वत्र समान रूप से लागू होते हैं और उनका फल भी एक होता है। सूखी लकड़ी जलाने पर जलती है या हवा गर्म करने पर हल्की होती है, विज्ञान में ये शाश्वत नियम हैं परन्तु भाषा विज्ञान में निश्चितता नहीं है। ’धर्म‘ और ’कर्म‘ एक से शब्द हैं, पर एक का विकास आज ’धरम‘ के रूप में हुआ और दूसरे का ’काम‘ के रूप में। दूसरी ओर भाषा विज्ञान पूर्णतः कला भी नहीं है। कला का प्रधान कार्य मनोरंजन और व्यावहारिक उपयोग है। भाषा विज्ञान पूर्णतः केवल ज्ञान पिपासा को शांत करता है। इस प्रकार भाषा विज्ञान का स्थान कला तथा विज्ञान दोनों के बीच में है। कला की अपेक्षा यह विज्ञान की ओर अधिक झुका हुआ है और इसीलिए इसका नाम भाषा विज्ञान है।‘‘

डाॅ. देवेन्द्रनाथ शर्मा के मतानुसार, ’’भाषा विज्ञान उस अर्थ में विज्ञान नहीं है जिस अर्थ में गणित, भौतिक या जैविकी। विज्ञान का सबसे बड़ा आधार है - कार्य-करण भाव की नित्यता अर्थात् कारण विशेष के रहने पर कार्य विशेष अवश्य हो फिर भी वह विज्ञान इसलिए है कि उसके नियम भी कार्य-कारण भाव पर आश्रित हैं। चूँकि उन नियमों में अपवाद भी है, इसीलिए वह शुद्ध विज्ञान की सीमा में नहीं आता, पर नियम है ही नहीं ऐसा नहीं कहा जा सकता। ध्वनि के सम्प्रेषण की दृष्टि से उसका सम्बन्ध भौतिक विज्ञान से है। भाषा की सामाजिक उपयोगिता को ध्यान में रखने पर वह सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत आता है और वैयक्तिक तथा सर्जनात्मक साहित्यिक रूपों में वह मानविकी का प्रमुख अंग है। इसीलिए भाषा विज्ञान न तो मनोविज्ञान या दर्शन के समान आनुभविक शास्त्र है और न गणित के समाज शुद्ध विज्ञान उसकी स्थिति मध्यवर्ती है क्योंकि इसमें दोनों की विशेषताएँ पाई जाती हैं। इसमें नियम व अनुभव दोनों का योग है।‘‘

उपर्युक्त विवेचन के पश्चात यह कहा जा सकता है कि भाषा विज्ञान के विज्ञान अथवा कला होने के विषय पर तर्क-वितर्क करने की अपेक्षा उसकी उपयेागिता व महत्ता पर ध्यान देकर उसका अध्ययन मात्र ही हमारे लिए महत्त्वपूर्ण है और यदि इसका गहनतम अध्ययन किया जाए तो इसे शुद्ध विज्ञान होने से कोई नहीं रोक सकता।